भारतीय ज्ञान–परम्परा तथा इसकी समसामयिक प्रासंगिकता
Indian Knowledge Tradition and its Contemporary Relevance

प्रो. प्रतापानन्द झा
निदेशक, कल्चरल इन्फॉर्मेटिक्स लैब, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, दिल्ली
pjha@ignca.nic.in

भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान–परम्परा हजारों वर्ष प्राचीन है। वेद भारतीय ज्ञान–विज्ञान का आधार हैं। हमारी सभ्यता, संस्कृति, कला, विज्ञान इत्यादि की मूलभूत अवधारणा वेद मंत्रों में सन्निहित है जिसे वेदाङ्गों और उपाङ्गों के द्वारा समझा जा सकता है। वेदों का अध्ययन वर्तमान में भी मौखिक परम्परा से हो रही है। वेद की पाठ परम्परा संभवतः विश्व की प्राचीनतम एवं अटूट शिक्षा व्यवस्था है। चार वेद, छह वेदाङ्ग, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र (स्मृतियाँ), पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद एवं अर्थशास्त्र, विद्या के कुल अट्ठारह प्रकार कहे गये हैं।

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या ह्येता चतुर्दशः।।

आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेत्यनुक्रमात् ।
अर्थशास्त्रं परं तस्मात् विद्या ह्यष्टादश स्मृताः ।। (विष्णु पुराण 3.6.28–29)

विद्या के इन्हीं अट्ठारह स्रोतों में निहित ज्ञान को जनमानस तक पहुँचाने के उद्देश्य से इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के तत्त्वावधान में वैदिक हेरिटेज पोर्टल (http://vedicheritage.gov.in) परियोजना का शुभारम्भ किया। परियोजना के प्रथम चरण में वेद, वेदाङ्ग एवं उपवेद से सम्बन्धित जानकारी को संकलित करने के साथ–साथ इन विषयों पर हो रहे शोधकार्यों की जानकारी इस परियोजना के माध्यम से पोर्टल पर उपलब्ध कराई गयी है। वैदिक वाङ्गमय से सम्बन्धित कोई भी जानकारी चाहे वह पाठ–परम्परा से हो या पाण्डुलिपियों/प्रकाशित पुस्तकों से हो, अथवा यज्ञ से सम्बन्धित पात्र आदि का भी वर्णन हो, वैदिक पोर्टल पर उपलब्ध होगा। केन्द्र भारतीय पारम्परिक कलाओं पर शोध के लिए समर्पित एक प्रमुख संस्थान है। इस केन्द्र ने भारतीय कला के मौलिक ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद के साथ कई महत्वपूर्ण संस्करणों का प्रकाशन किया है। महत्वपूर्ण वैदिक ग्रंथों जैसे मात्रा–लक्षण, काण्व शतपथ ब्राह्मण, बौधायन श्रौतसूत्र, लाट्यायन श्रौतसूत्र, पुष्पसूत्र, ऋग्वेद की आश्वलायन संहिता तथा शांखायन शाखा के रुद्राध्याय के साथ–साथ पुराण, शिल्प, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, वास्तु आदि विषयों से सम्बन्धित कई ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है। केन्द्र ने वेदों की मौखिक परम्परा का प्रलेखन भी अमूर्त्त सांस्कृतिक विरासत (Intangible Cultural Heritage) परियोजना के अन्तर्गत किया है। वेदों के विभिन्न पहलुओं पर कई संस्थान पृथक रूप से और अनेक विद्वान् व्यक्तिगत स्तर पर पहले से ही काम कर रहे हैं। आवश्यकता थी कि सभी संबंधित पक्षों का एक नेटवर्क बनाया जाए जो रचनात्मक रूप से एक–दूसरे के पूरक होंद्य वैदिक हेरिटेज पोर्टल ऐसा ही एक मञ्च है जो वैदिक ज्ञान को विश्व स्तर पर लोगों तक पहुँचाने में सहायता कर रहा है।

साथ ही, इस ज्ञान–विज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए, हजारों वर्ष पुरानी हमारी लिखित परम्परा है, जो एक–दूसरे की पूरक हैं। लिखित रूप में साहित्य का यह भंडार विभिन्न भारतीय भाषाओं और लिपियों में संरक्षित है जो कि भोज पत्र, ताल पत्र, सूती वस्त्र, सिल्क, कागज जैसे पदार्थों पर अंकित है। भारत के

पास एक करोड़ से अधिक पाण्डुलिपियों के होने का अनुमान है, जो शायद दुनिया का सबसे बड़ा संग्रह है। जीवन यापन से संबंधित ऐसा शायद ही कोई विषय हो जो हमारे पाण्डुलिपियों में नहीं है। इन पाण्डुलिपियों के संरक्षण और भारत की विशाल पाण्डुलिपि सम्पदा में सन्निहित ज्ञान को अनावृत करने के उद्देश्य से पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने फरवरी 2003 में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की स्थापना की। मिशन के प्रमुख उद्देश्यों में पाण्डुलिपियों का संरक्षण, पाण्डुलिपियों का सूचीकरण, पाण्डुलिपियों का प्रकाशन, पाण्डुलिपि शास्त्रों के अध्ययन में शोध को बढ़ावा देना है। मिशन के द्वारा लगभग 44 लाख पाण्डुलिपियों के सूचीकरण (cataloguing), लाखों पाण्डुलिपियों का डिजिटाइजेशन, सौ से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन और सैकड़ों कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। विभिन्न भाषा, लिपि एवं विषयों में होने के कारण अभी तक हम कुछ ही पाण्डुलिपियों तक पहुँचे हैं। इसके लिए जन–जागरण की जरूरत है।

ये दोनों परम्पराएं साथ साथ चलती रहीं और हमारे लोक एवं शास्त्र को समृद्ध करती रहीं। इन्हीं में निहित हमारे मूलभूत मानव मूल्यों को देश के विभिन्न सम्प्रदायों ने अपनी–अपनी दिनचर्या का भाग बना लिया। भारतीय पारम्परिक शिक्षा ने मौखिक एवं लिखित दोनों ही माध्यमों को समयानुसार अपनाया और मानव के संपूर्ण विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया। पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था पर आधारित विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के साथ–साथ काफी संख्या में वैदिक पाठशालाओं, मदरसों का आज भी विद्यमान होना इस बात का स्वतः प्रमाण है। कई विषय जैसे योग, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष, वास्तु, मूर्तिकला आदि आज भी काफी प्रचलित है। महामारी से जूझ रहे विश्व में, लोगों की जागरूकता और आस्था उन विषयों के प्रति बढी है जो जीवन में सहजता और सरलता ला सके। आवश्यकता है कि इन परम्पराओं में निहित ज्ञान को शोध एवं नवाचार के साथ जोड़ें, जो मानव के जीवन स्तर में सुधार ला सके।

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी, दैवं हि दैवमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः।।45।।

– विदुरनीति

उद्योगी पुरुषसिंह को ही लक्ष्मी प्राप्त होता है। देव की रट तो कायर व्यक्ति लगाते हैं। आत्मशक्ति से भाग्य से प्राप्त दोष को नष्ट करने के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ करने पर भी यदि सिद्धि प्राप्त नहीं होती तब भी हतोत्साहित नहीं होना चाहिए, वहां विचार करना चाहिए कि हमारे पुरुषार्थ में कहाँ क्या दोष रहा, जिस से इष्ट लाभ नहीं मिला। उस दोष को जानकार पुन सिद्धि के लिए प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार नित्य पुरुषार्थी स्वदोष दर्शन में समर्थ व्यक्ति कभी न कभी अपने इष्ट को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है।

प्रभूतकार्यमल्पं वा यन्नरः कर्त्तुमिच्छति।
सर्वारम्भेण तत्कार्यं सिंहादेकं प्रचक्षते।।42।।

–चाणक्य–सूक्त

मनुष्य जिस काम को करना चाहता है, वह काम बड़ा हो या छोटा, उसे सारे प्रयत्नो के साथ करना चाहिए, यह एक बात सिंह से सीखने को कही गई है।